पर्युषण पर्व का दूसरा दिन

सबसे उत्कृष्ट तपस्या है स्वाध्याय : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर, 6 सितम्बर, 2010

आचार्य महाश्रमण ने पर्युषण पर्व के दूसरे दिन स्वाध्याय दिवस पर कहा कि स्वाध्याय सबसे उत्कृष्ट तपस्या है। स्वाध्याय के अनेक ग्रंथ हैं, उन सबको पढ़ा जा सकता है, पर ग्रंथ ग्रंथ में पंथ पंथ में और संत संत में अन्तर होता है। सब ग्रंथ सब पंथ, सब संत एक जैसे नहीं होते। कौन ज्यादा उपयुक्त है इसका चयन कर स्वाध्याय में ग्रंथ का प्रयोग करना चाहिए। आध्यात्म के भावों से ओत प्रोत और राग से विराग की ओर बढ़ाने वाले ग्रंथ का स्वाध्याय करने से जीवन उत्कृष्ट बनता है।

आचार्य महाश्रमण ने जैन धर्म के रूप में तीर्थंकर भगवान महावीर के पूर्व भवों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा साधना मार्ग दर्शन है। जीव भव्य और अभव्य दोनों प्रकार के होते हैं। जो मोक्ष की योग्यता रखता है वह भव्य होता है और जो मोक्ष पाने की योग्यता नहीं रखता वह अभव्य जीव होता है, अभव्य जीव मुनि बन सकता है, आचार्य भी बन सकता है, उसके द्वारा दीक्षित साधु मोक्ष जा सकते हैं, पर वह स्वयं मोक्ष नहीं जा सकता। क्योंकि उसका चित्त धर्म से आप्लावित नहीं होता है।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि पर्युषण महापर्व का रंग खिल रहा है समणियां मुमुक्षु बहनें पर्युषण की दृष्टि से यात्रियित है, पर्युषण की आराधना दिन-रात कर रहे हैं, आज का दिन स्वाध्याय का दिन है मन, चित्त की साधना के लिए अनेक उपाय है उनमें एक है स्वाध्याय। स्वाध्याय मन की शांति को जगाने के लिए आत्मबल को बढ़ाने के लिए जरूरी है। उन्होंने अपने दैनिक चर्या के कार्यों में एक कार्य स्वाध्याय को जोड़ने की प्रेरणा दी।

उन्होंने यह भी कहा कि भोजन करते समय टीवी नहीं देखना चाहिए और चाय की चुस्कियों के साथ दैनिक समाचार पत्र नहीं पढ़ना चाहिए क्योंकि उसकी क्रिया के साथ जो हिंसा की खबरें हैं वह भी उसके दिमाग में प्रवेश करती है।

मुज्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने अपने विचार व्यक्त किये। साध्वीवृंद द्वारा समुह गीत प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर राजसमंद जिले के केवला से समागत केलवा चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी, मंत्री सुरेन्द्र भण्डारी, संयुक्त महामंत्री मूलचन्द मेहता, उपाध्यक्ष बाबुलाल कोठारी ने आचार्यश्री महाश्रमण के 2011 केलवा चातुर्मास का पोस्टर आचार्य महाश्रमण को समर्पित किया, कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

- **शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)